रखाआ की करवट

दिसम्वर की छट्टिया म कन हास्टल स घर आई थी।जी ता चाहता था कि लम्वी तान कर साई रह।हास्टल की घटी स वधी दिनचर्या स कछ दिना क लिए छटकारा ता मिला।पर कहा ®मम्मी ह कि अपनी अपक्षाए सजाए वठी थी।कन आएगी ता यह करूगी ,वह करूगी।कन क साथ फला फला क घर जाऊगी।सा घर आकर भी मन की करना कठिन हा गया था।

आज शाम का डडी क एक करीवी मित्र क घर वटी की शादी की वधाई दन उस साथ ल जाना चाहती थी।शादी ता उन्हान अपन पश्तनी गाव म जाकर की थी।अव शहर म उनकी वटी फ़्मम्मी√ पहली वार मायक आई थी।हमउम कन स मिलकर उस अच्छा लगगा एसा मम्मी का विचार था।सा बलि का वकरा कटन का तयार कन चल पडी मम्मी क साथ उनक घर।

आटी न कन का साथ दखत ही वडी गर्मजाशी स उनका स्वागत किया।वाली, फ़्आज ता विटिया रानी भी आई ह कसी हा√।मम्मी इस पर गर्व स मस्करा दी।कन का कनखिया स दखा।माना कन का साथ लाना सार्थक हा गया।दम्मी भी झट आकर मिली।काफी सजी धजी थी वा।कनिका व दमयती हमउम ही थी, लकिन आपचारिकता क सिवाय वहा कछ भी नही था।सा वनावटी मस्कराहट स दाना मिली।कछ था जा कन का वहा भा नही रहा था।खर मम्मी न दामाद क विषय म पछा कि व नही आए क्या।कि आटी तपाक स वाली, फ़्ा पहली वार अकल थाड ही भजा ह साथ आए ह।कहत ह साथ ही ल भी जाएग।√वालन म गर्व का पट था।कन न साचा कि ठीक ही ह।आजकल क मा वाप दामाद का अपनी वटी क आसपास मडरात दखत ह ता साचत ह वाजी मार ली।फिर भी अपना अपना ढग ह जीन का।कन का वारियत लगन लगी थी।उसका उठन का मन हा रहा था कि तभी आटी न कछ भापत हए कहा कि व लाग एलवम दखग कि वीडिया कसट लगाए®मम्मी न छटत ही जवाव दिया कि वीडिया कसट घर मगवा कर दख लग।अभी एलवम ही मम्मी का वाक्य अधरा ही रह गया, क्याकि तव तक आटी न दम्मी व उसक पति की फाटा दिखा दी।वाली,√कस लग®√दम्मी न भी गर्व स कन की आर दखा।कन न मजवरन उचटती नजर फाटा पर डाली।उसकी नजर वही अटक गई।शरीर म विजली का करट दाड गया।वह हरानी स भर उठी।य य य ता निपण! उसका निपण ह।

उसकी आख फटी की फटी रह गई। पलक झपकना ही भल गई। क्या क्या निपण ही दम्मी का ।ह भगवान् कन अभी सकत की हालत स सभल भी नही पाई थी कि बाहर किसी कार क रूकन व हार्न की आवाज आई। अकल क साथ निपण ।आज उसका निपण उसक सामन था परन्त उसका नही था। निपण भी अचानक अपनी कन का सामन दख दाना ही क्षण भर का ठग स खड रह गए ।दाना ही साच रह थ कि क्या कभी साचा था कि कभी मिलना हागा आर वा भी इन हालात म। कन मम्मी की जिद पर यदि आज यहा न आती ता ता इसक आग साचना भी उस सह्य नही हआ।

मम्मी भी तपाक स बाली अर यह ता अपना निपण ह। निपण न भी मम्मी क पर छए। ढरा सवाला स भरी नजर कन स चारी स मिली। कन व निपण दाना ही चप थ। माना दाना का साप सघ गया हा। निपण वहा स हट कर खिडकी क पास खडा हा बाहर दखन लगा बीच बीच म कन का भी दखता रहा। माना पछ रहा हा कहा गम हा गई थी तम ®आर अब मिली हा जब जब सब कछ खतम हा गया ह। उधर अकल न मम्मी स शादी पर न पहचन का गिला किया। दम्मी क पापा सतना म रहत थ। दम्मी की शादी स कछ पहल ही भापाल आए थ। सा निपण का कछ ज्ञात नही था। निपण न मम्मी स मन आर साहिल का हाल पछा। उन्हान वादा किया कि व कल निपण स आकर अवश्य मिलग। व लाग चलन क लिए उठन लग पर कन क पाव पत्थर हा रह थ। वा वहा स हटना ही नही चाहती थी। काश वक्त वही थम जाता। क्या कर क्या न कर। बबसी थी। उधर निपण भी जस भीतर ही भीतर टटता जा रहा था। यह कसा माड आया ह उनक जीवन म। यह कसी मजबरी थी कि तभी फान पर बात परी करक दम्मी भीतर स आई। छटत ही बाली ∫निपण यह कनिका। याद ह डिकी भया की शादी म काटा आई थी। √काश निपण कह सकता कि पिछल दा साल उसन एक उम की तरह इसी याद म ही ता काट ह। कितना तडपा था वह हर पल। पर अब शिष्टता क नात मस्कराकर उसन सिर हिला दिया। उसक भीतर झझावत चल रहा था। कन क चहर का पथराया दखकर वह अनमान लगा पा रहा था कि आग दाना आर बराबर थी। पर भाग्य स चक हा गई थी। सभ्यता व शिष्टता म कन व दम्मी कही मल नही खाती थी। कन हर लिहाज स ऊपर थी। कन आर निपण न अचानक ही एक ही समय एक दसर की आर दखा आर एक दसर क दिल म दर तक उतरत चल गए। गिल शिकव धात व हालात क समक्ष घटन टकत स हए।

मम्मी न उन सबका दा दिन बाद अपन घर खान पर आन का निमत्रण दिया।तब तक डडी भी दार स वापिस आ जाएग।कन ता कल ही हास्टल वापिस चली जाएगी।अब पनः निपण का वा कहा मिल पाएगी यह साचकर कन परशान हा उठी।कि तभी वस मिलकर करना भी क्या ह अब।निपण ता अब पराया ह उसका नही ह।अपन पागल मन का समझाती निपण का फिर भी जी भर कर आखा म समटती वह मन कडा कर घर की आर चल पडी।

घर पहचकर वह अपन कमर म जा कर पलग पर गिर पडी।खब फफक फफक कर राई ।अविरल आस बहाती धधली आखा स वह छत निहारन लगी।चल चित्र की भाति वहा करीब दा वर्ष पर्व की परछाईया उभरन लगी रु रु रु वह दसवी कक्षा का आखिरी पपर दकर घर आई ता दखा पकिग हा रही ह।विशन अकल क बट की शादी उनक पश्तनी गाव म हा रही ह राजस्थान म काटा क पास।वही जाना ह।गर्मिया म राजस्थान सनकर अटपटा सा लगा।पर नई जगह दखन की इच्छा सब पर हावी हा गई।मम्मी व बच्च जा रह थ जबकि दादी व पापा पीछ घर पर रहग।

दसर दिन दापहर का टन जस ही बिना प्लटफार्म क स्टशन पर रूकी गाव का खला उन्मक्त वातावरण कन का बहत भाया।विशन अकल का बटा डिकी अपन दास्त निपण क साथ खली जीप म उन्ह लन आया था।हा पहली नजर म एक दसर का छप छप कर दखना स्टशन स ही शरू हा गया था।मम्मी पााच साल क साहिल का गाद म लिए सामन की सीट पर डिकी क साथ बठी।जबकि दस वर्ष की मन लगी निपण स बतियान आर झट दास्ती करली उससे।कन का भी निपण भा रहा था।असल म वा था ही कछ आर्कषक व्यक्तित्व वाला।निपण मह स कम बालता था। उसकी आख अधिक बात करती थी।वह कन का घरता रहा।कन परशान हा कभी इधर कभी उधर दखती।कच्ची सडक पर हिचकाल लगन स ज्य ही कन सभलन लगती ता एकटक घरती आखा स कन की नजर टकरा जाती।उसक सार बदन म एक सिहरन सी दाड जाती।इसस पहल उसन एसा कभी महसस नही किया था।कभी वा बाला की झलती लट का चहर पर स हटाती ता कभी य ही घबराकर दपट्टा ठीक करन लग जाती।उसक भीतर कछ हलचल मच गई थी।अपलक तकना एस म ता काई भी घबरा जाए ना।सालहव वर्ष म पााव रखा था कन न क्या एसा हाता ह इस उम म।छि ःक्या साचन लगी वह उसन अपन आप का समझाया।

गाव का वडा सा खला घर।सीध साध लाग।आव भगत शरू हा गई।कन क दिला दिमाग पर ता निपण छाया हआ था।मन की गहरी छनन लगी थी उसस।कळ आठ दिना का कार्यकम था।शादी की गहमा गहमी म कन का हर पळ यही लगता जस दा आख उस घर रही ह।वह ज्यही इधर ऊधर दखती ता सामन निपण वठा उस ही ताक रहा हाता।मन यानि कि मनीषा निपण की उगली पकड हर कही घमती दिखती।दाना कछ न कछ वात करत रहत।एकाध वार कन न मन का डाटा भी पर मन कहा मानी।कन भी निपण क विषय म कछ पछना चाहती थी उसस पर हिम्मत नही जटा पाई।तभी कन का एक प्यारी सी गाव की भाली भाली सखी मिली√ कृष्णा√।वह ता पास आकर उसक वदन की सगध का भी सघती जा उस सवस भिन्न लगती।कृष्णा ता साय की तरह कन क आसपास मडरान लगी।उसीस पता चला कि निपण इजीनियरिग कर रहा ह डिकी का दास्त ह।वह भी उनकी तरह शादी पर गाव आया ह।रात का गान वजान का दार चला।कन अपन स्कल की वहतरीन कलाकार थी।उसन भी ढालकी की थाप पर लाक गीत सनाए।आवाज म लाच थी।सामन लडका की टाली वठी थी।खव सीटिया व तालिया वजी।कि तभी लडकिया न सिर पर दपट्टा वाधकर वालिया डाली फ़ान इश्क वराण्डी चढदी जाए√ अचानक कन व निपण सव कछ भलकर एक दसर की आखा म समान लग गए।कितना गहरा नशा छा रहा था उफ्फ्फ दाना पररू ।अगली सवह दाना क जीवन म इन्दधनषी रग भर कर लाई।अव ता पल भर का भी आखा स आझल हाना उन दाना का गवारा न था।कन का मन उसक वस म नही था।वह तयार भी हाती ता चाहती निपण उस जी भर क दख।आईन क सामन वठती ता स्वय स ही शरमा जाती।इन तीन दिना म ही कन का चहरा एक नई चमक स भर उठा।पानी का गिलास माग कर निपण न पछ ही लिया कितन दिन ठहरन का पागाम ह।एक हफ्त का वताया कन न।

वारात मथरा जानी थी।रल की दा वागी वक थी।निपण दल्ह क पास हागा या वागी क अन्दर जानत हए भी कन हर पल निपण की राह तकन लगी।कृष्णा कन की हालत दख दख कर मस्करा रही थी।उसक साथ रहन स वह सव कछ समझ गई थी।खिसियाकर कन खिडकी की आर करवट लकर नीद का पलका क घर म वद करन का असफल पयास करन लगी।उस वागी म सव सा रह थ।हल्की नीली राशनी का पकाश था वस।तभी ख्याला क भवर म डवती उतराती उसन ज्याही करवट ली कि सामन ऊपर वाळी वर्थ पर निपण का लट हए अपनी आर टकटकी लगाए दखा।वा ता मार खशी क अर र र कहत हए उठ वठी।दाना ही मस्करा दिए ।माना काई छिपा

हआ खजाना मिल गया हा।एक दसर का आखा ही आखा म न जान क्या क्या अफसान सनात रह।उन्ह पता ही नही चला कव पभात की पहली किरण फटी आर चार वज गए।नीद का ता कही नामा निशा तक न था वहा।साढ चार वज गाडी मथरा पहचती थी सा सभी उठ रह थ।इन दाना न आख मदकर झट सान का वहाना किया।जा कछ आखा न इस वीच पाया था माना उस अपन भीतर सजाए रखन क लिए।कृष्णा न उठकर कन का झकझारा फ़ठ न।कन जल्दी कर।√कन आख मलती झठ मठ उठी।तभी टन रूकी।सव उतरन लग।जस ही नीच उतरन व ऊपर चढन की भीड उमडी निपण न अचानक ही कन का अपनी वाहा क घर म कस लिया।कन का भी सारी रात की वचनी का सिला मिल गया।काश पळ वही थम जाता।व दाना य ही एक दसर स लिपट रहत।

कन आर निपण इस नवीन अनभव क अजीवा गरीव सख स सिहर उठ।पहली वार का आलिगन उफ्फ्फ्फ यह कसा नशा छा रहा था दाना पर®ार्मिया म भी ठडी हई जा रही थी कन ता।उस लगा उसकी धमनिया म रक्त जमता जा रहा था।खामाशी का दामन आढ गमसम सी वह कव सवक साथ वारात घर पहच गई उस पता ही नही चला।

सव की चहलवाजिया म कन हिस्सा नही ल पा रही थी ।पर फिर भी आज वा खश थी।दापहर का निपण न मम्मी क पास आकर वात की।कन आग क्या पढन का साच रही ह।वह इजीनियरिग करक अपना काम दखगा वगरह वगरह।रात का वारात म कन खव नाची।वह खिली कली सी महक रही थी।उसकी खशी उसक हर अग स टपक रही थी।निपण उसक इर्द गिर्द ही मडराता रहा।उसन कई वार उस अपनी वाहा म सभाला।शादी की भीड भाड म दाना खिलखिलात रह।सारी रात फरा क समय व साथ साथ वठ रह।अजान भविष्य क सपन वनत हए।आर भार हात ही विदाई का समय हा गया ।अव सव क विछडन की घडी करीव आ गई थी।मन न निपण भाई स उनका पता लिया।चिट्ठी लिखन क वाद हए।कन इशारा समझ रही थी।वस यही यही ता भाग्य न करवट ल ली आर कन व निपण न आखीर उसक समक्ष घटन टक दिए।

आसआ स नम आख लिए कन प्लटफार्म पर खड हाथ हिलात निपण का दखती रही जस कभी अर्जन न तीरन्दाजी क लिए मछली की आख का दखा था।उस आसपास आर कछ भी दिखाई नही द रहा था निपण क सिवाय।फिर हाथ म पकड नावल म झठ मठ का आख गडा

दी।मन का बचपना एक बहाना बन गया एक कहानी का शरू हात ही खत्म करन क लिए।मन न निपण क पत वाला कागज न जान कहा रख दिया था या फिर वा कही गिर गया था।भापाल पहचन पर निपण की चिट्ठी आई लकिन उसम उसका पता नही था।कनिका उस जवाब द भी ता कहा ।दावारा उसकी चिट्ठी मन क नाम स आई लकिन पता फिर नदारद।तडप कर रह गई कन।इसी वीच नई एडमिशन्स चाल हा गई।वह आग पढन हास्टल चली गई।वहा भी वह सारी सारी रात जागती पर किसी स कछ कह न पाती।डिकी स पता माग भी ता कस।उसस ता कभी बात ही नही की थी।वह लाज म डवी रह गई।उन मीठी यादा की सलगती भट्टी पर राख झडी भी ता शाल ही शाल थ अव जलन क लिए।दिल क किसी कान म जा एक इतजार था समय की आट म वह आज खत्म हा गया था।यादा क झराख स अतीत म झाकत हए गाला पर आस अविरल वह जा रह थ।कन झटक स उठी भर मन स अपना सामान पक करन लगी।उस हास्टल जाना ह आग जीन क लिए।भाग्य न हाथ की रखाआ की जा करवट ली उसक समक्ष वह हार गई थी।

लखिकाः
वीणा विज√उदित√